जन वाचन आंदोलन

बाल पुस्तकमाला

जब हिरोशिमा पर ऍटम बम गिरा तो सडाको केवल दो साल की थी। नौ साल बाद उसे कैंसर हो गया। अब बचने की एक ही उम्मीद थी। उसने एक हज़ार कागज़ के पक्षी मोड़ने की ठानी। क्या हुआ? क्या सडाको बच पाई? यह जानने के लिए आँखों को नम कर देने वाली यह सत्य घटना पढ़ें। यह कहानी पूरे ज़ोर से युद्ध की खिलाफत करती है। प्रत्येकअमन और चैन से जीने वाले व्यक्ति के लिए अनिवार्य पुस्तक।

भारत ज्ञान विज्ञान समिति

मूल्य : 15 रुपये B-25 Price : 15 Rupees

सडाको और कागज़ के पक्षी

एलीनेर कोयर

इस किताब का प्रकाशन भारत ज्ञान विज्ञान समिति ने देश भर में चल रहे साक्षरता अभियानों में उपयोग के लिए किया गया है। जनवाचन आंदोलन के तहत प्रकाशित इन किताबों का उद्देश्य गाँव के लोगों और बच्चों में पढ़ने-लिखने की रुचि पैदा करना है।

सडाको और कागज़ के पक्षी : एलीनेर कोयर
Sadako and the Paper cranes : Eleanor Coerr
प्रस्तुति : अरविन्द गुप्ता

जनवाचन बाल पुस्तकमाला के तहत भारत ज्ञान विज्ञान समिति द्वारा प्रकाशित

रेखांकन : अविनाश देशपांडे
(रोनेल्ड हिमलर के चित्रों पर आधारित)
लेजर ग्राफिक्स : अभय कुमार झा

पुनर्मुद्रण : वर्ष 2008

मूल्य : 15 रुपए

Bharat Gyan Vigyan Samithi
Basement of Y.W.A. Hostel No. II, G-Block
Saket , New Delhi - 110017
Phone : 011 - 26569943, Fax : 91 - 011 - 26569
email: bgvsdelhi@gmail.com
Printed Avneet Offset Press, Delhi

सडाको और कागज़ के पक्षी

एलीनेर कोयर

यादगार दिवस

आज सडाको की आंख तड़के ही खुल गई थी। उसकी बहन और दोनों भाई अभी भी सोए हुए थे। उसने अपने बड़े भाई मासाहीरो को चिल्ला कर उठाया "कब तक सोते रहोगे," उसने कहा, "तुम्हें पता नहीं कि आज शांति दिवस है।" जल्दी ही सडाको की छोटी बहन मित्सुई और छोटे भाई ईजी की नींद भी खुल गई।

सडाको ने बिस्तर बनाया और फिर वह रसोई में मां के पास गई और बोली, "जल्दी से नाश्ता दो। मुझे आज मेले में जाना है।"

चावल और सूप खाने के लिए मां कुछ मूली काट रही थी। उसने सडाको को थोड़ा डांटते हुए कहा, "तुम अब ग्यारह साल की हो गई हो और तुम्हें अब असलियत मालूम होनी चाहिए। हर वर्ष छह अगस्त को हम उन लोगों को याद करते हैं जो हमारे शहर हिरोशिमा में ऍटम-बम गिरने के कारण मरे थे। यह एक यादगार दिवस है।"

सडाको के पिता मिस्टर ससाकी ने कहा, "आज ही के दिन उस मनहूस बम में तुम्हारी दादी मरी थीं। यह एक अशुभ दिन है।"

उसके बाद सारा परिवार एक मेज़ के सामने प्रार्थना के लिए इकट्ठा हुआ। मेज़ पर दादी की फोटो एक सोने के फ्रेम में सज़ी रखी थी। मिस्टर ससाकी ने अपने पुरखों की आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की। उन्होंने ऍटम-बम से होने वाली कैंसर की बीमारी से सुरक्षित रहने के लिए भी प्रार्थना की।

ऍटम-बम को गिरे हुए नौ साल हो चुके थे। परंतु उसकी किरणें, उसका ज़हर, आज भी लोगों की मौत का कारण बना हुआ था।

शान्ति दिवस

जब सारा परिवार घर से बाहर निकला, तब तक सड़क पर काफी भीड़ हो चुकी थी। सडाको अपनी प्रिय मित्र चुज़ूको के साथ आगे दौड़ रही थी। दोनों में गहरी दोस्ती थी। दोनों पहली क्लास से एक ही कक्षा में थीं।

सडाको ने कहा, ''ज़रा जल्दी चलो, जिससे कि हम मेले को अच्छी तरह से देख सकें।''

''सडाको, इस तेज़ धूप में जरा हल्के-हल्के जाना,'' पीछे से मां ने पुकारा। लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। दोनों लड़कियां तेज़ी से सड़क पर दौड़ रही थीं।

शांति-पार्क की इमारत के सामने लोग चुपचाप खड़े थे। दीवारों पर ऍटम-बम से ध्वस्त शहर और मरते हुए लोगों के फोटो चिपके थे। ऍटम-बम ने हिरोशिमा को एक रेगिस्तान में बदल दिया था।

''मुझे ऍटम-बम का धमाका याद है,'' सडाको ने चुज़ूको से कहा। ''उस समय ऐसा लगा था जैसे करोड़ों सूरज एक साथ चमके हों।''

''पर तुम्हें यह कैसे याद रह सकता है,'' चुज़ूको बोली ''उस समय तुम केवल दो बरस की बच्ची रही होगी।''

''मुझे याद है,'' सडाको ने दृढ़ता से कहा।

बुद्ध भिक्षुओं की प्रार्थना के बाद, सैकड़ों सफेद कबूतरों को पिंजड़ों में से निकाल कर खुले आसमान में उड़ने के लिए मुक्त कर दिया गया।

मेले में खाने-पीने की बहुत सारी छोटी-छोटी दुकाने थीं। उनसे निकल रही खाने की स्वादिष्ट महक सडाको को बहुत अच्छी लग रही थी। परंतु उसे ऐसे भी कई लोग दिखाई दिए जिनके चेहरे पर बदसूरत सफेद निशान थे। ऍटम-बम की भीषण गर्मी से उनके चेहरे इतनी बुरी तरह झुलस गए थे, कि वह अब इंसानी चेहरे बिल्कुल नहीं लगते थे। जब कोई भी ऐसा व्यक्ति सडाको के पास आता तो वह दूसरी ओर चल देती।

जब सूरज ढल गया तब आसमान में अतिशबाज़ी के करतब दिखाए गए। उसके बाद सभी लोग कागज़ की बनी लालटेन लेकर नदी की ओर चले।

हरेक कागज़ की लालटेन के अंदर एक मोमबत्ती जलाई गई। लालटेनों के ऊपर मरे व्यक्तियों का नाम लिखा गया। सडाको ने अपनी लालटेन पर अपनी मृत दादी का नाम लिखा। फिर लालटेनों को नदी की धार में बहा दिया गया। लालटेनों का काफिला अंधेरे में जुगनुओं की तरह टिमटिमा रहा था।

छिपा रहस्य

पतझड़ का मौसम शुरू ही हुआ था। एक दिन सडाको स्कूल से दौड़ते हुए वापिस आई। आते ही उसने मां को खुशखबरी सुनाई, "आज तो बस गज़ब ही हो गया। मैं अपनी क्लास से रिले-रेस के लिए चुनी गई हूं।"

सडाको ने खुशी से अपने बस्ते को हवा में उछालते हुए कहा, "अगर मैं इसमें जीत गई, तो अगले साल जूनियर हाई-स्कूल की टीम में मेरा चुना जाना निश्चित है।" अगर सडाको की कोई दिली तमन्ना थी तो वह थी, स्कूल की रेस टीम में चुने जाना।

उस दिन के बाद से सडाको हर समय केवल रेस के बारे में सोचती। वह हर रोज़ स्कूल में दौड़ने का अभ्यास करती। अक्सर वह दौड़ते-दौड़ते ही स्कूल से घर वापिस आती। एक दिन उसके बड़े भाई मासाहीरो ने अपने पिता की घड़ी से सडाको के दौड़ने की गति को नापा। सडाको की तेज़ रफ्तार देख सब लोग अचरज में पड़ गए। ऐसा लगता था जैसे हवा से बातें कर रही हो।

आखिर, रेस का दिन आ ही पहुंचा। बच्चों के मां-बाप, रिश्तेदार और मित्रगण खेलों को देखने स्कूल में जमा हुए। सडाको थोड़ी घबराई हुई थी। उसे लग रहा था कि जैसे दौड़ के समय उसके पैर उठेंगे ही नहीं। दूसरी टीमों के खिलाड़ी उसे अपनी टीम की अपेक्षा कहीं अधिक मज़बूत और ऊंचे

नज़र आ रहे थे।

मां ने सडाको को समझाते हुए कहा, ''रेस से पहले थोड़ी सी घबराहट तो स्वभाविक है। पर तुम फ्रिक मत करो। तुम मैदान पर पहुंचते ही एकदम फर्राटे से दौड़ोगी।''

अपनी मां के प्यार भरे शब्दों से सडाको को बहुत सांत्वना मिली। उसका हौसला एकदम बुलंद हो गया।

दौड़ के शुरू होने की सीटी बजी। सडाको का पूरा ध्यान बस रेस पर केंद्रित था। उसे बाकी दुनिया जहान की कुछ सुध न थी। रिले रेस में जब उसकी बारी आई, तब सडाको अपना जी जान और शक्ति लगा कर दौड़ी। रेस खत्म होने के समय उसका दिल तेज़ी से धड़क रहा था।

उस समय सडाको का सिर एकदम चक्कर खाने लगा। जब उसकी दोस्त चिल्लाई, ''सडाको, तुम्हारी टीम जीत गई।'' तो भी उसे कुछ समझ में न आया। दो-तीन बार झटकने के बाद सिर का चक्कर चला गया।

पूरे जाड़ो भर सडाको अपनी रफ्तार को बेहतर करने के अभ्यास करती रही। स्कूल की टीम में जगह पाने के लिए रोज़ अभ्यास करना आवश्यक था। कई बार लंबी दौड़ के बाद उसका सिर चकराने लगता था। परंतु उसने इसके बारे में अपने परिवार में किसी को नहीं बताया। उसके दिल में घबराहट तो थी, परंतु उसने उसे अपनी प्रिय मित्र चुज़ूको को भी नहीं बताया।

एक दिन मां ने सडाको से कहा, ''तुम्हारी उम्र की लड़की को अब किमोनो (जापानी महिलाओं की पोशाक) पहनना चाहिए। जैसे ही मेरे पास पैसे इकट्ठे होंगे मैं तुम्हारे लिए एक किमोनो खरीद दूंगी।''

सडाको ने किमोनो के वायदे के लिए अपनी मां का शुक्रिया अदा किया। दरअसल उसे किमोनो की कुछ चाह नहीं थी। उसका दिल तो बस स्कूल की रेस टीम में अटका था।

रहस्य खुला

कुछ हफ्ते तो सब कुछ ठीक चलता रहा। लेकिन फरवरी की ठंड में एक दिन सुबह जब सडाको स्कूल के मैदान में दौड़ रही थी, तो अचानक उसे ज़ोर का चक्कर आया। चक्कर के मारे वह ज़मीन पर गिर पड़ी। एक टीचर ने झट से दौड़ कर उसे उठाया।

"मुझे लगता है कि मैं बहुत थक गई हूं," सडाको ने कमज़ोर आवाज़ में कहा। जब उसने थोड़ा खड़े होने की कोशिश की तब वह दुबारा गिर पड़ी।

मिस्टर ससाकी को बुलाया गया। वह सडाको को रेड-क्रास अस्पताल में ले गए। अस्पताल में घुसते ही सडाको का दिल भय से कांप उठा। अस्पताल का एक हिस्सा विशेष रूप से ऍटम-बम से पैदा बीमारी वाले रोगियों के लिए था।

कुछ ही मिनटों के अंदर सडाको के सीने का एक्स-रे लिया गया और उसके खून की जांच की गई। डाक्टर नुमाटा ने सडाको का मुआइना किया और उससे कई सवाल पूछे।

अब तक सडाको का पूरा परिवार अस्पताल पहुंच चुका था। सडाको ने मां को भर्राई हुई आवाज़ में कहते सुना, "ल्यूकीमिया- यानि खून का कैंसर - पर यह तो असंभव है।"

सडाको अब और कुछ भी सुनना नहीं चाहती थी। उसने अपने दोनों हाथों से कानों को ढंक लिया था।

थोड़ी देर में नर्स उसे अस्पताल के एक कमरे में ले गई। नर्स ने सडाको को एक सूती किमोनो पहनने को दिया। सडाको पलंग पर लेटी ही थी कि इतनी ही देर में उसका परिवार उससे मिलने आ गया।

मां ने सडाको को अपने गले से लगा लिया, "तुम्हें यहां शायद कुछ दिन अस्पताल में रहना पड़े, पर मैं हर रोज़ शाम को तुम से मिलने आया करूंगी।"

मासाहीरो, मित्सुई और ईजी ने भी रोज स्कूल के बाद उसके पास आने का वायदा किया।

सडाको ने अपने पिता से पूछा, "क्या मुझे सच-मुच ऍटम-बम का रोग लग गया है?"

मिस्टर ससाकी की आंखों में चिंता का भाव था। उन्होंने केवल इतना ही कहा, "डाक्टर तुम्हारे कुछ परीक्षण करना चाहते हैं, बस। इसके लिए तुम्हें अस्पताल में कुछ हफ्ते रहना पड़ेगा!"

कुछ हफ्ते! सडाको को हफ्ते, सालों जैसे लगे। वह अब स्कूल की रेस में कैसे हिस्सा ले पायेगी? उसने अपना संयम बनाए रखने और न रोने की बहुत कोशिश की।

सडाको को अब डर भी लग रहा था। उसे पता था कि बहुत से लोग जो अस्पताल में दाखिल होते हैं, कभी भी वापिस अपने घर नहीं जाते हैं। उस रात को वह घंटों तक रोती रही। उसने इतना अकेलापन पहले कभी भी महसूस नहीं किया था।

सुनहरी चिड़िया

अगले दिन सडाको थोड़ा देरी से उठी। नर्स ने उसे एक इंजेक्शन लगाया और कहा, "अस्पताल में रोज़ ही इंजेक्शन लगेगा। जल्द ही तुम इसकी अभ्यस्त हो जाओगी।"

उस दिन दोपहर को चुज़ूको - सडाको की सबसे प्रिय मित्र उससे मिलने आई। उसके चेहरे पर एक रहस्यमयी मुस्कान थी और उसने अपनी पीठ के पीछे कुछ छिपा रखा था। "ज़रा अपनी आंखें बंद करो," उसने सडाको से कहा।

सडाको ने कस कर अपनी आंखें भींच ली। कुछ देर बाद जब उसने

अपनी आंखें खोलीं तो उसके सामने कुछ रंगीन कागज़ और एक कैंची रखी थी।

"यह क्या है?" सडाको ने कागज़ों को घूरते हुए पूछा।

चुज़ूको अपने आप से खुश थी। "मैंने तुम्हारी तबियत ठीक करने का एक तरीका खोज निकाला है।"

फिर चुज़ूको ने सुनहरे कागज़ से एक बड़ा चौकोन काटा और उसे मोड़ कर उसने एक सुंदर सुनहरी चिड़िया बना दी।

सडाको को कुछ समझ में नहीं आया। "परंतु यह कागज़ की चिड़िया मुझे कैसे ठीक करेगी?" उसने पूछा।

"तुम्हें क्या सारस पक्षी की पुरानी कहानी नहीं मालूम," चुज़ूको ने पूछा, "सारस पक्षी एक हज़ार साल तक जीवित रहते हैं। और अगर कोई बीमार व्यक्ति एक हज़ार कागज़ के पक्षी बनाये, तो भगवान उसे दुबारा स्वस्थ्य बना देते हैं।" उसने सडाको को कागज़ की चिड़िया थमाते हुए कहा, "यह लो, तुम्हारा पहला पक्षी।"

सडाको की आंखों में आंसू भर आए। उसने अपने दिल से चुज़ूको को धन्यवाद दिया।

जब सडाको चौकोर कागज़ को मोड़ कर चिड़िया बनाने लगी तो उसे उसमें काफी कठिनाई आई। देखने में सरल लगने वाली चिड़िया को बनाना उतना आसान न था। चुज़ूको की मदद से सडाको ने कागज़ को मोड़ कर पक्षी बनाना सीखा। सडाको ने काफी मेहनत करके दस चिड़िए बनायीं। फिर उसने उन सभी को सुनहरे पक्षी के पास कतार में सज़ा दिया। उसकी कुछ चिड़िए एकदम ठीक नहीं बनी थीं। एक-दो थोड़ी टेढ़ी-मेढ़ी थीं। परंतु यह तो बस शुरुआत थी।

"अब मुझे केवल नौ सौ नब्बे चिड़िए और बनानी हैं," सडाको ने कहा। उस सुनहरी चिड़िया के पास वह अपने आप को सुरक्षित महसूस कर रही थी। कुछ ही हफ्तों में, उसने सोचा वह एक हज़ार कागज़ की चिड़िए बना

लेगी। फिर उसकी तबियत ठीक हो जायेगी और वह घर वापिस चली जायेगी।

जब मासाहीरो स्कूल से वापिस आकर सडाको से मिलने आया तो उसने चिड़ियों को देख कर कहा, ''तुम्हारी मेज़ तो छोटी है। उस पर इतनी चिड़ियों की जगह तो है नहीं। इसलिए मैं इन पक्षियों को छत से लटका देता हूं।''

सडाको बेहद खुश थी। वह मुस्करा रही थी।

''तुम मुझ से वादा करो कि मैं जितनी भी चिड़िए बनाऊंगी उन सब को तुम टांग दोगे,'' सडाको ने कहा।

मासाहीरो ने यह करने का पक्का वायदा किया।

''फिर तो तुम्हें कुल मिलाकर एक हज़ार कागज़ के पक्षियों को धागों से लटकाना होगा,'' सडाको ने कहा। उसकी आंखों में अब आशा की चमक थी।

''एक हज़ार!'' मासाहीरो ने कहा, ''कहीं तुम मज़ाक तो नहीं कर रही हो!''

उसके बाद नर्स से धागा और टेप मांग कर मासाहीरो ने दसों पक्षियों को छत से लटका दिया। सुनहरा पक्षी सडाको की मेज़ पर ही रखा रहा।

शाम को मां के साथ मित्सुई और ईजी भी सडाको से मिलने के लिए आए। हरेक कोई कागज़ की चिड़ियों को देख कर चकित हुआ। मां को सबसे छोटी हरी चिड़िया सबसे अधिक पसंद आई। उन्होंने बताया कि छोटे कागज़ को मोड़ना बहुत कठिन होता है।

जब सब लोग घर वापिस चले गए तब सडाको के कमरे में फिर एक बार सन्नाटा छा गया। सडाको अकेला महसूस करने लगी। अपनी हिम्मत को बनाए रखने के लिए उसने कुछ और कागज़ की चिड़िए बनायीं

ग्यारह..... मैं जल्दी ठीक हो जाऊं!

बारह..... मैं जल्दी ठीक हो जाऊं!

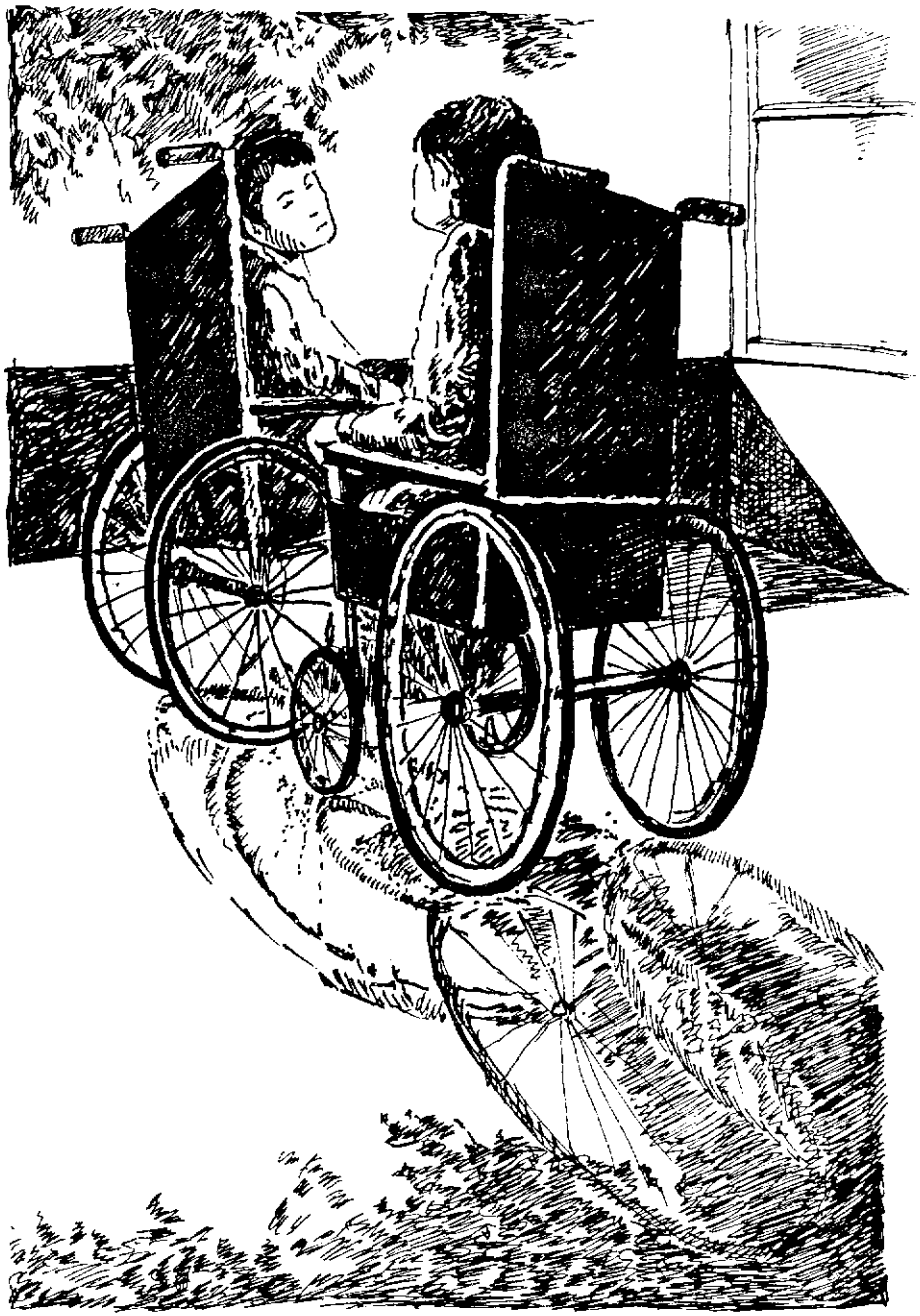

केनजी

कागज़ के पक्षी एक शुभ प्रतीक थे। सभी लोग सडाको के पक्षियों के लिए कागज़ जमा करने लगे। चुज़ूको अपनी कक्षा से कुछ रंगीन कागज़ मांग कर लाई। पिता अपनी हज्जाम की दुकान में हरेक काग़ज़ का टुकड़ा संज़ो कर रखते। नर्स भी दवाइयों के पैकेट के कागज़ को सडाको के लिए संभाल कर रखती। और मासाहीरो अपने वायदे के अनुसार हरेक पक्षी को करीने से छत से लटका देता। कभी-कभी वह कई चिड़ियों को एक ही धागे से लटका देता। सिर्फ बड़े पक्षी धागे पर अकेले उड़ते।

अगले कुछ महीनों में कई बार ऐसा लगता जैसे मानो सडाको एक दम भली-चंगी हो गई है। परंतु डाक्टर नुमाटा ने कहा कि सडाको का अस्पताल में रहना ही उचित था। अब तक सडाको को इस बात का पता चल चुका था कि उसे ल्यूकीमिया यानि खून का कैंसर है। पर वह यह भी जानती थी कि कुछ मरीज़ इस बीमारी से एक दिन ठीक भी हो जाते हैं। उसने अपने स्वस्थ्य होने की उम्मीद नहीं छोड़ी थी। उसे पूरी आशा थी कि एक दिन वह पूरी तरह ठीक हो जायेगी।

अच्छे दिनों में सडाको खूब व्यस्त रहती थी। वह अपने स्कूल का काम करती, अपने मित्रों को पत्र लिखती, और मिलने आने वाले व्यक्तियों के साथ पहेलियां बूझती, खेल-खेलती और गाने गाती। शाम के वक्त वह कागज़ों के चौकोरों को मोड़ कर चिड़िए बनाती थी। वह अभी तक तीन सौ से भी ज़्यादा चिड़ियों का काफिला बना चुकी थी। अब पक्षी मोड़ने में उसका हाथ साफ हो गया था। उसकी उंगलियां कागज़ के मोड़ों को अच्छी तरह पहचानने लगी थीं। अब सभी पक्षी सुंदर और सजीव बनने लगे थे।

परंतु धीरे-धीरे ऍटम-बम की बीमारी सडाको के शरीर में फैलती गई। उसे दर्द का अहसास होने लगा। कभी-कभी उसके सिर में इतना तेज़ दर्द होता कि वह न तो पढ़ पाती और न ही कुछ लिख पाती। कभी उसे ऐसा

लगता जैसे उसकी हड्डियों में आग लगी हो और वह गल रही हो। ऐसी तकलीफ के समय उसकी आंखों के सामने अंधेरा छा जाता। इस कमज़ोर अवस्था में वह कुछ नहीं कर पाती थी। वह सिर्फ खिड़की के बाहर खड़े पेड़ को टकटकी लगाए निहारती रहती थी। वह घंटों उस सुनहरे पक्षी को अपनी गोद में लिए बैठी रहती थी।

एक दिन सडाको बेहद कमज़ोरी महसूस कर रही थी। तब नर्स उसे पहियों वाली कुर्सी पर बिठा कर बाहर बरामदे में ले आई। वहां कुछ धूप थी। यहां पर पहली बार सडाको की मुलाकात केनजी से हुई। केनजी नौ साल का था, परंतु वह अपनी उम्र से कहीं छोटा लगता था। सडाको उसके बौने चेहरे और चमकती काली आंखों को घूरती रही।

"हेलो!" उसने कहा, "मैं सडाको हूं।"

केनजी ने बहुत हल्की सी आवाज़ में जवाब दिया। कुछ देर बाद दोनों पुराने दोस्तों की तरह बातें करने लगे। केनजी बहुत समय से अस्पताल में था, परंतु बहुत कम लोग उससे मिलने आते थे। उसके माता-पिता की मृत्यु हो गई थी और वह पास के एक शहर में अपनी नानी के साथ रहता था।

"मेरी नानी इतनी बूढ़ी है कि वह हफ्ते में केवल एक बार ही मुझ से मिलने आती हैं," केनजी ने कहा, "इसलिए मैं अधिकतर समय सिर्फ पढ़ता रहता हूं।"

सडाको केनजी के उदास चेहरे को देखती रही।

"पर अब कुछ फर्क भी नहीं पड़ता है," केनजी ने अपनी बात ज़ारी रखते हुए कहा, "क्योंकि मैं जल्द ही मर जाऊंगा। ऍटम-बम की वजह से मुझे खून का कैंसर हो गया है।"

"परंतु तुम्हें ल्यूकीमिया हो ही नहीं सकता है," सडाको ने कहा।

"जब ऍटम-बम गिरा था तब तो तुम पैदा भी नहीं हुए थे।"

"उससे कुछ अंतर नहीं पड़ता है। बीमारी का ज़हर मेरी मां के शरीर में जो था," केनजी ने कहा।

सडाको ने केनजी को सांत्वना देने की कोशिश की। उसने केनजी को सुनहरे पक्षी के बारे में भी बताया।

''मुझे पक्षियों के बारे में पता है,'' केनजी ने कहा, ''परंतु अब बहुत देर हो चुकी है। अब मुझे भगवान भी नहीं बचा सकते हैं।''

अपने कमरे में आकर सडाको गहरे सोच में डूब गई। उसने सबसे अच्छे और रंगीन कागज़ों के कुछ पक्षी मोड़े और उन्हे केनजी के लिए भेज दिए। ''शायद मेरे पक्षी केनजी के दुख को दूर कर सकें,'' उसने सोचा। फिर सडाको ने अपने लिए कुछ कागज़ की और चिड़िए मोड़ीं।

तीन सौ नवासी .....

तीन सौ नब्बे .....

एक दिन केनजी बरामदे में दिखाई नहीं दिया। नर्स ने आकर सडाको को बताया कि रात केनजी चल बसा। सडाको यह दुख सह न सकी। दीवार की ओर मुंह करके सडाको सुबक-सुबक कर रोने लगी।

सडाको ने जब रोना बंद किया तब तक रात हो गई थी। उसने आसमान में झिलमिल करते तारों की ओर देखा और नर्स से पूछा, ''क्या केनजी इन असंख्य तारों में से एक तारे में चला गया है।''

''वह जहां कहीं भी है, मेरे ख्याल से अब खुश है,'' नर्स ने कहा।

''उसने अपने इस थके और बीमार शरीर को त्याग दिया है। उसकी आत्मा अब मुक्त है।''

सडाको, हवा में थिरकते पेड़ों के पत्तों की आवाज़ को सुन रही थी। फिर उसने पूछा, ''इसके बाद मैं ही मरूंगी। है न?''

''नहीं, '' नर्स ने सिर हिला कर कहा। फिर नर्स ने पलंग पर रंगीन कागज़ बिछाए और सडाको से कहा, ''सोने से पहले मुझे एक कागज़ का पक्षी मोड़ कर दिखाओ। जब तुम्हारे एक हज़ार पक्षी बन जायेंगे तब तुम एकदम ठीक हो जाओगी, और फिर बूढ़ी होने तक ज़िंदा रहोगी।''

सडाको को नर्स की बात पर विश्वास करने में कठिनाई हो रही थी। उसने

सावधानी पूर्वक कई पक्षी मोड़े और अपने ठीक होने की मिन्नत मांगी।

चार सौ तिरेसठ .....

चार सौ चौंसठ .....

सैकड़ों शुभकामनायें

जून आया और उसके साथ बारिश। दिन भर पानी की बूंदे खिड़की के कांच से टकराती रहतीं।

सडाको का चेहरा अब पीला पड़ गया था। अब अस्पताल में केवल उसके माता-पिता और बड़े भाई को आने की अनुमति थी। उसकी कक्षा ने उसके लिए एक लकड़ी की जापानी गुड़िया भेजी थी। उस कोकुशी गुड़िया को सडाको ने सुनहरे पक्षी के पास मेज़ पर रख दिया।

मां की चिंता बढ़ रही थी, क्योंकि सडाको ने अब खाना बहुत कम कर दिया था। एक दिन मां सडाको का सबसे प्रिय पकवान बना कर लायी। परंतु सडाको उसका केवल एक कौर ही खा पाई। सडाको के जबड़े सूज गए थे और उससे अब कुछ भी चबाया नहीं जाता था।

सडाको का परिवार गरीब था। वह बहुत मेहनत के बाद उसके लिए अच्छा, पौष्टिक खाना जुटाते थे। और वह भी सडाको के गले से नहीं उतरता था। यह सब सोचकर सडाको की आंखों में आंसू आ गए।

मां ने सडाको को अपने कलेजे से चिपका लिया और कहा, "तुम फिक्र न करो। तुम ठीक हो जाओगी। जिस दिन सूरज निकलेगा उस दिन तुम अच्छा महसूस करोगी।"

फिर मां ने सडाको को स्कूल की किताब में से पढ़कर कुछ कविताएं सुनायीं।

जब मासाहीरो आया तो उसने सडाको को अपनी जेब में से निकाल कर एक मुड़ा हुआ चांदी के रंग का कागज़ दिया। "इसे ईजी ने दिया है, जिससे

कि तुम एक और पक्षी बना सको।''

सडाको ने कागज को सूंघा। उसमें चॉकलेट की खुशबू थी।

''शायद भगवान को भी चॉकलेट की खुशबू पसंद आए,'' सडाको ने कहा।

यह सुनकर तीनों लोग ठहाका मार कर हंसे। कितने दिनों में आज पहली बार सडाको हंसी थी। यह एक शुभ-संकेत था।

शायद सुनहरे पक्षी के जादू ने अब काम करना शुरू कर दिया था। सडाको ने चांदी के रंग वाले कागज़ को सीधा किया और उससे एक चिड़िया मोड़ी।

पांच सौ इकतालिस .....

परंतु वह अब थक गई थी। और चिड़िए मोड़ने की उसमें शक्ति नहीं बची थी। मां ने जाते हुए एक कविता दोहराई जिसे वह बचपन में सडाको को सुनाती थीं।

''स्वर्ग के सुनहरे पक्षियों
मेरी बच्ची को अपने पंखों से ढंक दो।''

आखिर के कुछ दिन

जुलाई का अंत होने को आया था। अब धूप निकल आई थी और हवा में गर्मी थी। सडाको की तबियत भी कुछ बेहतर लग रही थी। ''मैं हज़ार में से आधे से ज्यादा तो पक्षी बना चुकी हूं,'' उसने मासाहीरो से कहा, ''इसलिए लगता है कि कुछ शुभ ही होगा।''

और कुछ हुआ भी ऐसा ही। उसकी भूख लौट आई और दर्द चला गया। डॉक्टर नुमाटा इस प्रगति पर प्रसन्न हुए और उन्होंने सडाको को एक बार अपने घर घूम आने की इज़ाज़त दे दी। घर जाने की बात सुनकर सडाको इतनी खुश हुई कि उस रात उसे नींद ही नहीं आई। इसलिए सारी रात वह

वर्गाकार कागज़ों को मोड़कर उनकी चिड़िए ही बनाती रही।

छह सौ बीस .....

छह सौ इक्कीस .....

अपने घर आकर और परिवार के सभी सदस्यों से मिलकर सडाको की खुशी का ठिकाना ही न रहा। मां और मित्सुई ने सडाको के आगमन के लिए घर को रगड़-रगड़ कर साफ किया था।

सडाको के सुनहरे पक्षी और कोकुशी गुड़िया को भी वह अस्पताल से ले आए थे। अच्छे खाने की खुशबू से घर महक रहा था। सडाको खुश थी। शायद वह अब घर पर ही रह सकेगी और उसे अस्पताल वापिस नहीं जाना पड़ेगा।

कई दिनों तक ससाकी परिवार के तमाम रिश्तेदार और मित्र सडाको से आकर मिलते रहे। परंतु एक हफ्ते के अंदर ही सडाको के चेहरे पर थकान साफ झलकने लगी थी। वह अब चुपचाप बैठी रहती थी और आने-जाने वाले मेहमानों को केवल देखती रहती थी।

सडाको की कमज़ोर हालत देख सभी लोग दुखी थे। मां को बार-बार तेज़ दौड़ने वाली अपनी प्यारी और चंचल सडाको की याद आती।

अगले दिन ही सडाको को अस्पताल वापिस जाना पड़ा। पहली बार वह अस्पताल के शांत, एकांत कमरे में खुश थी। उसके माता-पिता बहुत देर तक उसके साथ बैठे रहे। सडाको अपनी नींद में ही कुछ बड़बड़ा रही थी।

मां को कुछ समझ न आया। उन्होंने सडाको का हाथ अपने हाथ में थाम लिया।

पिता ने कहा, ''सडाको, अब तुम्हें बस कुछ और चिड़िए बनानी है और फिर तुम ठीक हो जाओगी।''

इतनी देर में नर्स आई। उसने सडाको को दवाई पिलाई। आंखें बंद करने से पहले सडाको ने सुनहरे पक्षी को उठा कर कहा, ''एक दिन मैं ठीक हो

का कोई पता ही नहीं चलता था। एक दिन जब वह जागी तो उसने मां को पास में बैठे हुए रोते हुए पाया।

"रो मत मां," सडाको ने विनती की, "कृपा कर रोओ मत।" सडाको शायद कुछ और कहना चाहती थी, परंतु उसकी जीभ और मुंह चलना बंद हो गए। उसकी आंख से एक आंसू टपक कर नीचे गिरा। उसने अपनी मां को कितना अपार दुख पहुंचाया था। सडाको अब कुछ नहीं कर सकती थी। वह केवल कागज़ के पक्षी मोड़ सकती थी और किसी दैवीय करिश्में का इंतज़ार कर सकती थी।

उसने एक कागज़ उठाया। परन्तु उसकी कमज़ोर उंगलियां उसे ठीक प्रकार से मोड़ नहीं पायीं।

"अब तो मैं कागज़ के पक्षी भी मोड़ने की अवस्था में नहीं रही," सडाको ने अपने आप से कहा। एक बार फिर पूरी शक्ति लगा कर सडाको ने कागज़ को मोड़ने का प्रयास किया। परंतु तभी उसकी आंखों के सामने अंधेरा छा गया।

कुछ मिनटों बाद डाक्टर नुमाटा सडाको को देखने आए। उन्होंने उसके माथे पर अपना हाथ रखा। उन्होंने आहिस्ते से सडाको के हाथ से कागज़ हटाया और कहा, "अभी तुम आराम करो। यह चिड़िया तुम कल बना लेना।"

सडाको ने मूर्छा अवस्था में अपना सिर हिलाया।

कल ..... कल उसके लिए बहुत बहुत दूर था।

अगली बार जब सडाको ने आंखें खोलीं तो उसका सारा परिवार उसके पास था। सडाको उन्हें देख कर मुस्कुराई। वह हमेशा उनके दिल में समाई रहेगी। इस बात का उसे पूरा विश्वास था।

ऐसा लग रहा था जैसे रोशनी की किरणें उसकी आंखों के सामने थिरक रही हों। सडाको ने अपना पतला हाथ सुनहरे पक्षी को छूने के लिए आगे बढ़ाया। सडाको की जीवन शक्ति धीरे-धीरे ढल रही थी परन्तु सुनहरा पक्षी उसमें अभी भी उम्मीद के प्राण फूंक रहा था।

उसने छत से लटकी चिड़ियों को निहारा। तभी पतझड़ की हवा का एक झोंका आया और सारी चिड़िए हवा में मंडराने लगी। ऐसा लगने लगा जैसे वह चिड़िए जीवित हों और खिड़की के बाहर नीले आसमान की ओर पंख पसारे उड़ रही हों। वह पक्षी कितने सुंदर और मुक्त थे। सडाको ने एक आह भरी और अपनी आंखें बंद कर लीं।

वह फिर कभी नहीं उठी।

❐❐❐❐

सडाको का देहांत 25 अक्टूबर 1955 को हुआ।

उसकी कक्षा के साथियों ने मिलकर बाकी 356 कागज़ के पक्षी मोड़े, जिससे कि सडाको को 1000 पक्षियों के साथ दफ़नाया जा सके। सडाको के मित्रों ने उसकी और ऍटम–बम से मरने वाले बच्चों की याद में, एक स्मारक बनाने की सोची। सारे देश के बच्चों ने इसमें उनकी मदद की। 1958 में यह स्मारक बन कर तैयार हुआ। यह हिरोशिमा के शांति पार्क में स्थित है। स्मारक में सडाको एक सुनहरी पहाड़ी पर खड़ी है और उसके दोनों हाथों में एक पक्षी है।

हरेक साल, शांति दिवस पर बच्चे सडाको के स्मारक पर कागज़ के पक्षियों की मालायें पहनाते हैं। सडाको के स्मारक के नीचे लिखा है :–

यही हमारे आंसू हैं
यही हमारी प्रार्थना है
दुनिया में शांति हो ।